(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध)

सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान, मध्यप्रदेश

प्रान्तीय कार्यालयः 'प्रज्ञादीप' हर्षवर्धन नगर, भोपाल-४६२००३

दूरभाषः (0755) 2761225, ई-मेलः vidyabhartibpl@gmail.com,

www.vidyabhartimp.org

पंजीयन क्र.-17195

पत्र क्रमांक : 48/2021

दिनांक-31/05/2021

प्रति,

श्रीमान व्यवस्थापक/प्राचार्य/प्रधानाचार्य
सरस्वती शिशु विद्या मंदिर .....
मध्यभारत प्रान्त

विषय : विषय : सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान।

आदरणीय बन्धुवर,

सप्रेम नमस्कार।

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ होंगे। कोरोना महामारी के इस कालखण्ड में भी विद्या भारती के कार्यकर्ता सदैव की भांति अपने सामाजिक दायित्व को समझते हुए समाजसेवा के कार्य में सतत् संलग्न हैं। जिसके समाचार विविध माध्यमों से हमें और आप को मिल रहे हैं।

इस महामारी पर नियंत्रण करने हेतु महत्वपूर्ण उपाय है-सभी का टीकाकरण (Vaccination)। परन्तु इस कार्य में सबसे बड़ी कठिनाई है- टीके की उपलब्धता। विश्व की जिन आठ कम्पनियों ने कोरोना के लिये वेक्सीन बनाई है, उनका उस पर एकाधिकार (Patent) है तथा उसके कारण यह टीके अत्यन्त महँगे हैं। इन टीकों के महँगे होने के कारण विकासशील तथा गरीब राष्ट्रों को अपने सभी नागरिकों का टीकाकरण करने में अत्यधिक कठिनाई है। सम्पूर्ण मानव समाज के समक्ष उपस्थित इस भीषण आपदा में भी मुनाफाखोरी का यह प्रयास पूर्णतः निन्दनीय ही है।

इस विषय पर ध्यानाकर्षण करने तथा इन टीकों को पेटेण्ट के नियम से मुक्त रखने के लिये स्वदेशी जागरण मंच एक अभियान चला रहा है। विश्व को Covid-19 के खिलाफ सुरक्षित बनाने के लिए, Universal Access to Vaccines & Medicines (UAVM) के लिए, एक Petition (याचिका) यहां साथ भेजी जा रही है। आप सभी के हस्ताक्षर होने के बाद यह याचिका WTO / Govts./ संबंधित कंपनियों को भेजी जाएगी ताकि पेटेंट / बौद्धिक संपदा अधिकारों में छूट दिलवाकर ज्यादा से ज्यादा कंपनियों द्वारा इनका अधिकाधिक उत्पादन करवा कर विश्व को जल्दी से कोरोना मुक्त करवाया जा सके। कृपया नीचे दिए पेटिशन के लिंक पर क्लिक कर इसे भर कर सबमिट करें व दूसरों से भी करवाएं एवं विद्यालयशः सम्मिट करने वाली संख्या जिला केन्द्र पर संग्रह कर प्रान्त की ईमेल आईडी पर भेजने की व्यवस्था करें।

https://joinswadeshi-com/form2/

इसी आशा के साथ आपके सहयोग की अपेक्षा में। धन्यवाद।

भवदीय

(शिरोमणि दुबे)
प्रादेशिक सचिव

प्रतिलिपिः-

1. मान. संगठन मंत्री/सहसंगठन मंत्री महोदय मध्यभारत प्रान्त।
2. श्रीमान प्रान्त प्रमुख/ समस्त विभाग समन्वयक मध्यभारत प्रान्त।

E:\Patil July 18-19\Sanskar Kendra

वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान

Universal Access to Vaccines & Medicines (UAVM)

(मानव कल्याण हेतु स्वदेशी जागरण मंच का प्रयास)

- **पृष्ठभूमि-** संपूर्ण विश्व गत जनवरी 2020 से ही कोरोनावायरस से जूझ रहा है। चीन के वुहान नगर से उत्पन्न इस अदृश्य वायरस ने अब तक 34 लाख से अधिक लोगों के प्राण ले लिए हैं। विश्व के लगभग सभी देशों (204) में इसकी पहली लहर ने तो कोहराम किया ही है, अब अनेक देशों में दूसरी व तीसरी लहर भी आई है। इसके कारण से विश्व भर की अर्थव्यवस्थाएं लड़खड़ा गई हैं। रोजगार बड़ी मात्रा में समाप्त हुए हैं।भारत भी गत वर्ष -7.5% जी.डी.पी. के साथ मुश्किल से संभला है। बेरोजगारी की विकराल चुनौती से अभी निपटने को बड़े प्रयास करने होंगे। विश्वास व सकारत्मकता भी बढ़ानी होगी।
- **भारत का पहली लहर से सफलतापूर्वक निपटारा:** भारत में कोरोना की पहली लहर से सफलतापूर्वक निपटा। जब फरवरी में रिकवरी रेट 97% पार कर गया। प्रतिदिन केस 11000 तक आ गए व मौतें 300 से भी कम हो गईं थी। भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को भी संभाला तो अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने भारत की 12.5-13% वृद्धि की संभावनाएं जताईं। रोजगार भी काफी मात्रा में स्थिर हुआ।
- **दूसरी लहर, एक बड़ा तूफान:** अप्रैल से दूसरी लहर एक बड़े तूफान के रूप में आई। इससे प्रतिदिन 3.5 लाख से 4 लाख तक नए केस आए। 3500 से अधिक मौतें हो रही हैं। हस्पताल, बिस्तर, दवाइयां, ऑक्सीजन, एंबुलेंस यहां तक कि शमशान घाट सब कम पड़ गए। सरकार और समाज पूरी ताकत से लगे हैं, विश्व से भी सहायता आ रही है। किंतु अभी चीज़े पर्याप्त नहीं हो रही। भारत इस समय अपने सबसे चुनौतीपूर्ण समय में है। यद्दपि अब दूसरी लहर उतराव पर है।
- **महामारी मुक्ति के दो उपाय:** पुराने मरीजों का इलाज करने के अतिरिक्त, कोरोनावायरस न फैले, नए केस कम हों, इसके लिए विश्व भर में दो उपाय प्रत्यक्ष उभरे हैं। पहला है **लॉकडाउन!** दूसरा है **वैक्सीन**। इंग्लैंड में जहां प्रतिदिन नए केस 2000 से कम व मौतें 10 से कम हो गईं हैं, के प्रधानमंत्री जॉनसन ने कहा है कि सख्त लॉकडाउन (95 दिन) के कारण (प्रमुख रूप से) यह हुआ है। भारत ने भी प्रांत अनुसार फिर से लॉक डाउन प्रारंभ किए है। किंतु इससे अर्थव्यवस्था व रोजगार का बहुत नुकसान हो रहा है।

- **वैक्सीन,बड़ा सुरक्षा कवच:** दूसरा उपाय है वैक्सीन। भारत सहित दुनिया भर में 15 वैक्सीन अविष्कृत हुई है। किंतु सार्वत्रिक, स्वीकार्य व प्रमाणिक चार हैं। 1. फाइजर 2. मॉडर्ना 3. एक्स्ट्राजेनिका 4. जॉनसन एंड जॉनसन। भारत की **कोवैक्सीन** (ICMR के साथ) पूर्ण स्वदेशी है व दूसरी **कोविशील्ड** सिरम इंस्टीट्यूट की एक्स्ट्राजेनिका के साथ अनुबंध में है। रूस की स्पूतनिक है तो चीन की सिनोवेक है। भारत अभी तक लगभग 20 करोड ख़ुराक लगाने वाला तीसरा देश है। (चीन 42 करोड़ व अमेरिका 30 करोड़

के बाद) विश्व भर में अभी तक 170 करोड़ वैक्सीन की ख़ुराक लोगों को लगाई जा चुकी है। अमेरिका में 60%, इंग्लैंड में 65%, चीन में 32% तो भारत में 14% वयस्कों को लग चुकी है। कुछ ना कुछ मात्रा में हर देश में लग रही है। लेकिन अधिकांश विकासशील (गरीब) देशों में यह 1-2% ही है।

- **वैक्सीन का प्रभाव कितना है? :** यद्यपि विभिन्न प्रकार की वैक्सीन न्यूनतम समय (1 साल से कम) में खोजी गई हैं, किंतु उसके परिणाम काफी अच्छे हैं। भारत में जिन 11 करोड़ लोगों को प्रथम खुराक मिली, उनमें से केवल 21353 लोग ही पॉजिटिव हुए हैं, अर्थात 0.03%। यहां तक कि दूसरी ख़ुराक लिए 1.74 करोड़ में से भी 5713 याने वही 0.03% को हुआ है। **(ICMR के आंकड़े)**

  इज़राइल जहां 55% (80%-18 वर्ष से ऊपर) आबादी का टीकाकरण हुआ वहां अब नए केस 70 से 80 ही आते हैं। मृत्यु 1 या 2 प्रतिदिन। इंग्लैंड ने भी कुल आबादी का 45% (75%- 18 वर्ष से ऊपर) होने से प्रतिदिन केस 2 हजार से कम व मौतें (20 से कम) अमेरिका में 40% (70% - 18 वर्ष से ऊपर) होने से प्रतिदिन नए केस 40,000 से कम व मृत्यु 800 से कम पर आ गई है। अर्थात वैक्सीन पूर्ण रूप से प्रभावी है। साइड इफेक्ट भी बहुत कम हैं।

- **वैक्सीन से की , मोटी कमाई:** फिर प्रश्न उठता है, कि यदि वैक्सीन का ऐसा उपयोग है तो भारत में इसे सभी को तुरंत क्यों नहीं लगा दी जाती? और यह तो प्रश्न सारे विश्व के लिए भी है। भारत में 16.2 करोड़ लगाई जा चुकी है। इसमें से लगभग 14 करोड बनाने वाली कोविशील्ड के पेटेंट का अधिकार एक्स्ट्रा जेनिका के है। भारतीय कोवैक्सीन ने 3 करोड़ ख़ुराक बनाई है किन्तु उसे विकसित देशों ने अभी मान्यता नहीं दी।

  विश्व में ये चार कंपनिया **फाइजर, मॉडर्ना, एक्स्ट्राजेनिका, जॉनसन एंड जॉनसन** अब तक 75 करोड़ से अधिक वैक्सीन बना चुकी है। इसका अधिकांश हिस्सा अमीर 27 देशों में गया है। और वे गत 4 महीनों में ही 26 अरब डॉलर की मोटी कमाई कर अपने शेयरधारकों को दे चुकी हैं। कमाई का यह क्रम जारी है।

- **विकासशील देशों की जनता, कहाँ जाए?:** विश्व की 786 करोड़ आबादी के 70% हिस्से को भी यदि वैक्सीन लगानी हो, तो भी 1100 करोड़ वैक्सीन चाहिए। यदि ये 4-5 प्रमुख कंपनियां ही बनाती रहीं, तो पूरी दुनिया के लिए 3 से 4 वर्ष लग जाएंगे। और यह बहुत महंगी भी है (फाइजर ₹1650, मॉडर्ना ₹2700, व जॉनसन एंड जॉनसन ₹3800 (एक ही डोज़ होती है) गरीब देशों और उनकी सरकारों के लिए इतनी बड़ी कीमत देना बहुत कठिन है। फिर इसके रखरखाव, आने-जाने में बहुत खर्च होता है। अर्थात अमीर देशों की 20% जनता को तो यह मिल जाएगी, गरीब देशों (80% जनता) के लिए रास्ता बनाना होगा। क्योकिं प्रत्येक मनुष्य को बचाना ईश्वरीय इच्छा है।
- **पेटेंट मुक्त वैक्सीन ही उपाय:** उपाय एक ही है। क्योंकि यह कंपनियां पहले ही काफी कमाई कर चुकी हैं, अब वे यदि इसे पेटेंट से मुक्त कर दें और इसकी टेक्नोलॉजी व अन्य आवश्यक

पासकोड, कच्चा माल बाकी देशों को दे दें, तो अनेक देशों में फार्मा कंपनियां वैक्सीन का उत्पादन कर सकेंगी। इससे कीमत बहुत कम होगी, उपलब्धता पर्याप्त होगी, व आगामी 1 से 1.5 वर्ष में दुनिया में वैक्सीन अधिकांश लोग लगा सकेंगे **(कुछ रॉयल्टी यह कंपनियां ले सकती हैं।)** इस विचार योजना से कोरोनावायरस मुक्त विश्व का स्वप्न साकार होगा, तभी सब सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि सिद्धांत है **"No one will be safe until all are safe".**

- **सर्व-सुलभ वैक्सीन की बाधाएं:** इसे पेटेंट मुक्त करने में सबसे बड़ी बाधा तो स्वयं यह 4-5 कंपनियां ही हैं। इनके अतिरिक्त भी बड़ी फार्मा इंडस्ट्री, उनके शेयरधारकों का विश्व भर में फैला तंत्र, अमेरिका, इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड के कुछ राजनीतिज्ञ भी नहीं चाहते। अपने को सेवाभावी कहने वाले बिल गेट्स व अन्य अनेक बुद्धिजीवी भी इसे पेटेंट मुक्त नहीं करना चाहते। उनका कहना है कि इससे भविष्य में फार्मा की नई खोजों हेतु लोग पैसा निवेश नहीं करेंगे और बाकी देशों व उनकी छोटी फार्मा इंडस्ट्री कि यह क्षमता भी नहीं है कि वह इस अत्याधुनिक तकनीक से युक्त वैक्सीन को सुरक्षित रूप से बना पाएं। जबकि यह पूरा सच नहीं है।

- **अभियान का अगुआ भारत:** भारत ने दक्षिण अफ्रीका को साथ लेकर अक्टूबर 2020 में ही यह प्रस्ताव विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) व WTO की TRIPS समिति के आगे रख दिया था। अभी तक 9 बार इस विषय पर बैठकें हो चुकी हैं, पर वे बेनतीजा रहीं। अंतरराष्ट्रीय फार्मा लॉबी का दबाव इतना है कि फ्री वैक्सीन अभियान को सफल नहीं होने दे रहे।

इस प्रस्ताव के हक में भारत को 120 देशों की सरकारों का समर्थन मिल चुका है। अब तो अमरीकी सरकार ने भी समर्थन दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के डायरेक्टर जनरल (DG) **टेड्रोस अदनोम** ने समर्थन देते हुए कहा है **"अब नहीं तो कब, पेटेंट फ्री करने का समय आएगा?" WTO** की प्रमुख **Ngozi Okonjo-Iweala** ने भी अनुकूल रुख दिखाते हुए कहा है कि **"वैक्सीन तो सभी को मिलनी ही चाहिए, इसके लिए तीसरा रास्ता भी विचार कर सकते हैं।"** अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के मुख्य चिकित्सा सलाहकार **डॉ. एंथोनी एस. फैंसी** ने कहा है **"drug makers should supply other Nations at an extremely 'diminished price' or by transferring technology to developing world, make cheap copies".**

Anna Marriot (Health policy advisor of Oxform) ने People Vaccine Alliance की ओर से बोलते हुए कहा है- **"we should not allow corporations to decide who lives and who dies, while boosting their profit".**

उधर नोबेल पुरस्कार विजेता, **मोहम्मद यूनुस** (बांग्लादेश) ने भी **'Patent Free Vaccine for Common Good'** नाम से अभियान शुरू किया है और **200 पूर्व राष्ट्रध्यक्षों, नोबेल विजेताओं** ने पेटीशन लिखकर अमेरिकी सरकार को वैक्सीन को फ्री करने का अनुरोध किया है। भारत में **Universal**

Access to Vaccine & Medicines (UAVM) अभियान की शुरुआत **स्वदेशी जागरण मंच** की प्रेरणा से हुई है। नोबेल विजेता Joseph Stiglitz, Prof. Françoise, Barré-Sinoussi आदि भी समर्थन जुटाने में लगे हैं।

- **दवाईयां भी हों पेटेंट मुक्त:** कुछ यही वैक्सीन जैसा विषय कोरोना की दवाईओं के बारे में भी है। जैसे रेमिडीसीवेर ₹900 से ₹3500 प्रति वाईल है तो Tocilizumab ₹40,000 प्रति वाईल है। Favipiravir व Molnupiravir या Fabiflu भी बहुत महंगी मिलती है (पेटेंट के कारण)। यदि कोरोना की दवाइयों, उपकरणों को पेटेंट से छूट मिलती है तो वे काफी सस्ते में सबको मिल सकेंगी। सबको सुलभ व सस्ते में चिकित्सा उपलब्ध करवाना सभी सरकारों का नैतिक दायित्व होता है।
- **एक पूर्ववर्ती उदाहरण:** ऐसा एक पुराना उदाहरण **AIDS/HIV** की दवाइयों का है 1990-2000 के दशक में HIV की दवा ₹2,40,000 में, अमेरिकन, यूरोपियन कंपनियां बेचती थीं। भारत में Compulsory Licensing का उपयोग करते हुए, इसे Novartis कंपनी ने बना कर कहा, कि हम तो इसे केवल ₹800 में बेचने को तैयार है। क्योंकि अफ्रीकी देशों में यह बीमारी ज्यादा फैली थी, वे गरीब भी थे। वहां जब इन कंपनियों ने पेटेंट का हवाला देते हुए भारतीय दवाईयों को रोका तो उनके खिलाफ प्रदर्शन हो गए और अंततः उन्हें पीछे हटना पड़ा व स्वयं कहने लगे हम तो $1 प्रति डोज़ दे देंगे।

- **हम सब करें संकल्प:** भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व के विकासशील देशों व विकसित देशों की संवेदनशील जनता भी, वैक्सीन को पेटेंट से मुक्त करा सर्व सुलभ बनाने हेतु उठ खड़ी हुई है। इसके लिए लेख, चैनलों में वार्ता, वेबीनार आदि शुरू हो चुके हैं। सब तरफ बैठकें, गोष्ठियों होने लगी हैं। प्रदर्शन ज्ञापन भी शुरू हो रहे हैं। प्रबुद्ध वर्ग, कलाकार, पूर्व सैनिक, शिक्षाविद, वैज्ञानिक सब आ रहे हैं समर्थन में। इसी का परिणाम है कि अमेरिकी सरकार ने भी समर्थन का आश्वासन दिया है। हम सब संकल्प करें कि **कोरोना से विश्व की पूर्ण मुक्ति के लिए** इसकी वैक्सीन, दवाईयां, अन्य उपकरण को न केवल पेटेंट मुक्त बल्कि तकनीकी का हस्तांतरण, कच्चा माल, अन्य पासकोड, ट्रेड सीक्रेट आदि को भी संपूर्ण विश्व की जनता को उपलब्ध करवाएंगे। हम यह भी संकल्प करें कि भारत की जनता ही नहीं, **विश्व मानवता की कोरोनावायरस से सुरक्षा के लिए सब तरह से हम तन-मन-धन लगाकर इस अभियान को सफल करेंगे।** मानवता की सेवा करने का इससे अधिक आवश्यक और उपयुक्त समय दूसरा कब आएगा?..... **जय स्वदेशी-जय भारत-जय विश्व!**

स्वदेशी जागरण मंच

'धर्मक्षेत्र', शिव शक्ति मंदिर, बाबू गेनु मार्ग, रामकृष्ण-पुरम, सेक्टर-8
नई दिल्ली, 110022, Web: joinswadeshi.com , swadeshionline.com

परम् बंधुवर, सादर नमस्ते!

आशा है, स्वस्थ प्रसन्न होंगे। कोरोना महामारी की पहली व दूसरी लहर के समय पर अपने स्वयंसेवकों ने बड़े पैमाने पर सेवा कार्य देशभर में चलाए। सरकार व समाज दोनों के प्रयत्नों से दूसरी लहर में भी कमी आती दिखाई दे रहीं है। इस महामारी से निपटने के दो उपाय विश्वभर में मान्य हुए हैं। पहला है लॉकडाउन, दूसरा है वैक्सीन। लॉकडाउन लगाना व पालन करवाना सरकारों का काम हैं। किंतु वैक्सीनेशन करने-कराने में स्वयंसेवक बड़ी भूमिका निभा रहे हैं, और आगे भी निभा सकते हैं।

किन्तु इसमें एक बड़ी कठिनाई वैक्सीन उपलब्धता की है। भारत में तीन वैक्सीन का उत्पादन हो रहा है। एक पूर्णतय: स्वदेशी और बाकि 2 (कोविशील्ड और स्पुतनिक) का फार्मूला बाहर का है लेकिन बनती हमारे यहाँ ही है। किन्तु भारत की विशाल आबादी के लिए कम से कम इसमें 6 महीने तक का समय लगेगा। उधर विश्व के विकासशील (ग़रीब) देशों में तो स्थिति काफी चिंताजनक है। इसका उपाय केवल एक है कि विश्व की जिन 8 बड़ी कंपनियों ने वैक्सीन बनाई है वे इसे पेटेंट मुक्त करें। इसकी तकनीक को विश्वभर में फैली वैक्सीन निर्माता कंपनियों को दे दें व कच्चा माल , अन्य सुविधाएं आदि देकर शीघ्र अति शीघ्र, विश्व की सम्पूर्ण 786 करोड़ जनता को वैक्सीन लगाने का मार्ग प्रशस्त करें।

स्वदेशी जागरण मंच ने इसके लिए वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान (Universal Access to Vaccines & Medicines (UAVM)) चलाया है। इस अभियान में हम विश्वभर के लाखों लोगों से याचिकाएं, हस्ताक्षर (डिजिटल) करवाकर विकसित देशों की सरकारों, WTO, वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों व अन्य सहायक संस्थानों के प्रमुखों को भेजेंगे। जिससे सभी को प्रेरित करते हुए भारत व विश्व की सम्पूर्ण जनता को टीका लगाकर इस महामारी से मुक्ति दिलवाई जा सकें। स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ताओं ने सपूर्ण विश्व में यह याचिका हस्ताक्षर अभियान जोर-शोर से शुरू कर दिया हैं।

आपको भी इस विषय का फॉर्म (लिंक) व कुछ अन्य सामग्री भेजी जाएंगी। आपसे निवेदन है कि अपने क्षेत्र/प्रान्त में अधिकाधिक लोगों से इस याचिका पर हस्ताक्षर करवाकर (Link Form भरना) इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग करें। इस अभियान की अंतिम तिथि 13 जून (रविवार) है। अत: आपसे निवेदन है कि अपने संगठन के सभी कार्यकर्ताओं शाखाओं के सभी स्वयंसेवकों को इस अभियान में सहयोग करने का संकेत करेंगे, ऐसा विश्वास है। शेष शुभ

आपका

आर. सुंदरम

अ. भा. संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच

याचिका

वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान

(मानव कल्याण हेतु एक प्रयास)

प्रिय बंधु व भगिनी,

कोरोना से लड़ने हेतु वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा (Universal Access to Vaccines & Medicines **(UAVM)**) अभियान में यह याचिका आपके बहुमूल्य सहयोग की उम्मीद करती है।

आज, कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में मानवता को घेर लिया है। अभी तक कोई 17 करोड़ लोग रुग्ण हो चुके है और 34 लाख से अधिक चल बसे हैं। कुछ देशों में टीके और दवाओं की कमी का भी सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि **पेटेंट क़ानून उनके बड़े पैमाने पर उत्पादन को बाधित कर रहे हैं।** वर्तमान दर पर, विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या का टीकाकरण होने में 2 से 3 साल लग सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका और कई अन्य राष्ट्रों के साथ मिल कर भारत सरकार ने TRIPS (व्यापार-संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकारों) के प्रावधानों में छूट के लिए डब्ल्यूटीओ में यह मुद्दा उठाया है। यद्दपि अमेरिका एवं 120 देशों ने भी समर्थन दे दिया है, परन्तु कुछ बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनियों और व्यक्तियों द्वारा इसके बारे में असहमति व असहयोग दिखाया जा रहा है। अर्चने डाली जा रही हैं।

इस याचिका के माध्यम से, कोविड -19 के चंगुल से मानवता को बचाने के लिए, हम निम्नलिखित निवेदन करते हैं:

1. **विश्व व्यापार संगठन, बौद्धिक संपदा अधिकार के प्रावधानों में छूट दे।**
2. **वैश्विक दवा निर्माता और वैक्सीन निर्माता कपनियां स्वेच्छा से, मानवता के लिए, अन्य निर्माताओं को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सहित पेटेंट मुक्त अधिकार दें।**
3. **सरकार, अन्य दवा निर्माताओं (वैक्सीन व दवाईयां) को लाइसेंस देने के लिए अपने संप्रभु अधिकारों का उपयोग करने सहित, आवश्यक कदम उठाये।**
4. **कोरोना के खिलाफ लड़ने के लिए एवं वैक्सीन और दवाओं की वैश्विक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए, सभी संबंधित व्यक्ति और संगठन बढ़-चढ़कर आगे आएँ ।**

आइए हम इस पुनीत कार्य के लिए एकजुट होकर आगे आएं।

कृपया याचिका पर हस्ताक्षर करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://joinswadeshi.com/form2/

धन्यवाद और सादर,
टीम **joinswadeshi.com**

ई-मेल : joinswadeshi2020@gmail.com
मोबाइल: 8814038140